जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्नातक स्तर के विद्‌यार्थियों तथा शिक्षकों के संदर्भ में शोध

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के संदर्भ में शोध

Dr. Ullhas Dadhakar[1]* Dr. Rakesh Kumar David[2] Manoj Kumar Sahu[3]

[1] Academic Counselor

[3] Assistant Professor

सार – जनसंख्या शिक्षा का प्रत्यय नवीन है जिसका सम्बन्ध जनसंख्या के आकार,वृद्धि अथवा ह्नास,संरचना, लैंगिक अनुपात तथा वैवाहिक आयु आदि के ज्ञान से है। इसी जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या की वृद्धि और ह्नास के कारणों, उनके सामाजिकर्, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी भी सन्निहित है। वस्तुतः जनसंख्या शिक्षा कुटुम्ब को छोटा या बड़ा रखने का परामर्श देने वाली शिक्षा से भिन्न है। जनसंख्या शिक्षा का सम्बन्ध सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उत्थान से है तथा जनसंख्या नीतियों और कार्यक्रमों का राष्ट्र के विकास कार्यक्रमों से सम्बन्धित होना आवश्यक है। इस दृष्टि से जनसंख्या-शिक्षा जीवन स्तर को उच्च बनाने तथा सु खी जीवन की सम्भावनाओं की वृद्धि करने वाली शिक्षा है। राष्ट्र की प्रगति में जनसंख्या तथा उपलब्ध प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनों का क्या सम्बन्ध है, वे किस तरह एक दूसरे को प्रभावित करती हैं, इसका अध्ययन करना तथा सुझाव देना है। प्रस्तुत शोध कार्य स्नातक स्तर के कला तथा विज्ञान वर्ग के छात्रा-छात्राओं तथा स्नातक स्तर के शिक्षकों पर आधरित है। यह कार्य जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा की संचेतना सम्बन्धित परीक्षण के आधर पर किया गया है। जनसंख्या शिक्षा वह शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विश्व के संदर्भ में जनसंख्या की स्थिति का शोध करने के लिए, विद्यार्थियों में उचित, तार्किक और दायित्त्वपूर्ण दृष्टिकोण तथा परिवेश का सामना करने के लिए यथोचित व्यावहारिक गुणों का विकास करता है। वर्तमान समय में स्नातक स्तर के विद्यार्थी तथा शिक्षक जनसंख्या वृद्धि तथा उससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं के प्रति कितना जागरूक हैं? इसी का शोध प्रस्तुत शोध कार्य में किया गया है।

---------------------------------X---------------------------------

शोध का उद्देश्य-

1- स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान का तुलनात्मक शोध करना।

2- स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं का जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान का तुलनात्मक शोध करना।

3- स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का शोध करना।

4- स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का शोध करना।

5- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान का तुलनात्मक शोध करना।

6- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा शिक्षको की जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का तुलनात्मक शोध करना।

परिकल्पना -

उद्देश्य के अनुसार शोध कार्य को सम्पादित करने के लिए निम्नांकित शोध परिकल्पनाओं की संरचना की गयी है।

1- स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

2- स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

3- स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना में सार्थक अन्तर है।

4- स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना में सार्थक अन्तर है।

5- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा महाविद्यालयी शिक्षकों की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

6- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा महाविद्यालयी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना में सार्थक अन्तर है।

शोध विधि-

प्रस्तुत शोध कार्य विवरणात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्रकार का अनुसंधन है। सर्वेक्षण अनुसंधन किसी समुदाय के कार्य, व्यवहार, वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की प्रत्याशाओं का आंकड़ों के आधार पर लिया गया निर्णय है। इस प्रकार सर्वेक्षण अनुसंधन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी समुदाय की रचना तथा क्रियाओं के सामाजिक पक्ष के सम्बन्ध में गणनात्मक तथ्य संकलित किये जाते हैं।

जनसंख्या तथा प्रतिदर्श -

जनसंख्या के रूप में कोरबा जिला के महाविद्यालयों के कला तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है तथा चयनित महाविद्यालयों के शिक्षकों को भी प्रतिदर्श में शोध हेतु सम्मिलित किया गया है, जबकि विद्यार्थियों का चयन निर्धारित सं ख्या के अनुसार यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन के प्रतिदर्श में 70 शिक्षकों, 100 स्नातक विज्ञान वर्ग के छात्रो, 50 स्नातक विज्ञान वर्ग की छात्रायें, 100 स्नातक कला वर्ग के छात्रो, 50 स्नातक कला वर्ग की छात्रायें यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किए गए हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ –

परीक्षण द्वारा प्राप्त आकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, तथा मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त परीक्षण एवं मापनी-

शोध कार्य के सम्पादन में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों पर 'जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान सम्बन्धित परीक्षण' तथा 'जनसंख्या शिक्षा सं चेतना मापनी' का प्रयोग किया गया है । जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान परीक्षण में 32 पदों को तथा जनसंख्या शिक्षा संचेतना मापनी में 35 पदों को सम्मिलित किया गया है। परीक्षण तथा मापनी में प्रयुक्त कुछ पदों के उदाहरण निम्नवत हैं-

अ. जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान सम्बन्धित परीक्षण

1- जनसंख्या के आधर पर भारत का विश्व में स्थान है-

(क) पहला (ख) दूसरा
(ग) तीसरा (घ) चैथा

2- भारत में जनसंख्या वृद्धि दर है-

(क) 2.4% (ख) 3%

(ग) 3.4% (घ) 3.8%

ब. जनसंख्या शिक्षा संचेतना मापनी

1. जनसंख्या शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न होती है

सहमत अनिश्चित असहमत

( ) ( ) ( )

2. जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि का जीवन स्तर पर पड़ने वाले ऋणात्मक प्रभाव का ज्ञान होता है।

सहमत अनिश्चित असहमत

( ) ( ) ( )

शोध कार्य की परिसीमायें -

प्रस्तुत शोध कार्य कोरबा जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों के कला तथा विज्ञान वर्ग के स्नातक स्तर के छात्रा-छात्राओं तथा शिक्षकों पर आधरित है।

आंकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या -

पूर्वनिर्मित परिकल्पनाओं के आधार पर आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण निम्नवत है-

परिकल्पना-1 स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

$$H0: m1 = m2$$

$$H1: m1 \neq m2$$

सारणी - 1

	N	Mean	S.D	σ m	σ D	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
कला छात्र	100	10.57	4.13	0.41	0.92	0.18	.05 पर नहीं है	.01 पर नहीं है
विज्ञान छात्राएँ	50	10.40	5.82	0.82				

परिकल्पना-2 स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

$$H0: m3 = m4$$

$$H1: m3 \neq m4$$

सारणी – 2

	n	Mean	S.D	σ m	σ D	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
क्ला छात्र	100	10.96	3.31	0.33	0.58	3.93	.05 पर नहीं है	.01 पर नहीं है
विज्ञान छात्राएँ	50	8.68	0.40	0.48				

परिकल्पना-3 स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रतिसंचेतना में सार्थक अन्तर है।

$$H0: m5 = m6$$

$$H1: m5 \neq m6$$

सारणी – 3

	N	Mean	S.D	σ m	σ D	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
क्ला छात्र	100	37.3	13.9	1.39	2.23	3.36	.05 पर नहीं है	.01 पर नहीं है
विज्ञान छात्राएँ	50	44.8	12.4	1.75				

परिकल्पना-4 स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रतिसंचेतना में सार्थक अन्तर है।

$$H0: m7 = m8$$

$$H1: m7 \neq m8$$

सारणी – 4

	n	Mean	S.D	σ m	σ D	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
क्ला छात्र	100	43.0	15.9	1,59	2.60	2.81	.05 पर नहीं है	.01 पर नहीं है
विज्ञान छात्राएँ	50	35.7	14.6	2.06				

परिकल्पना-5 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा महाविद्यालयी शिक्षकों की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

$$H0: m9 = m10$$

$$H1: m9 \neq m10$$

सारणी – 5

	n	Mean	S.D	σ m	σ D	क्रान्तिकअनुपात	सार्थकता स्तर	
क्ला छात्र	100	10.77	15.9	0.37	2.60	2.81	.05 पर नहीं है	.01 पर नहीं है
विज्ञान छात्राएँ	50	12.06	4.15					

Dr. Ullhas Dadhakar[1]* Dr. Rakesh Kumar David[2] Manoj Kumar Sahu[3]

परिकल्पना-6 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तथा महाविद्यालयी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना में सार्थक अन्तर है।

$$H0: m11 = m12$$

$$H1: m11 \neq m12$$

सारणी – 6

	N	Mean	S.D	σ m	σ D	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
क्ला छात्र	100	39.5	14.8	1.48	2.24	3.36	.05 पर नहीं है	.01 पर नहीं है
विज्ञान छात्राएँ	50	45.3	14.05	1.68				

परिणाम तथा निष्कर्ष –

परिकल्पना 1 के लिए क्रान्तिक अनुपात का मान 0.18 प्राप्त हुआ है। जो कि .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात स्नातक स्तर के कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि के ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः पूर्व में निर्मित शोध परिकल्पना अस्वीकार की जायेगी तथा शून्य परिकल्पना H0:m1=m2 स्वीकार की जायेगी।

परिकल्पना 2 के लिए क्रान्तिक अनुपात का मान 3ण्93 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के .01 स्तर पर सार्थक है, अर्थात 99% स्थितियों में स्नातक विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला वर्ग की छात्राओं की जनसंख्या मध्यमान अंक से 2.28 अधिक है। अतः विज्ञान वर्ग के छात्रों की जनसंख्या वृद्धि का ज्ञान कला वर्ग की छात्राओं से बेहतर है ।

परिकल्पना 3 के लिए क्रान्तिक अनुपात का मान 3.36 प्राप्त हुआ है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है अर्थात शोध परिकल्पना स्वीकार की जायेगी और यह कहा जा सकता है कि 99% स्थितियों में स्नातक कला वर्ग के छात्रों तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं में जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना में सार्थक अन्तर है। इस स्थिति में विज्ञान वर्ग की छात्राओं का मध्यमान अंक कला वर्ग के छात्रों से अधिक है अतः विज्ञान वर्ग की छात्राओं का जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्तर उच्च है।

परिकल्पना 4 के लिए क्रान्तिक अनुपात का मान 2.98 प्राप्त हुआ है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है अर्थात 99% स्थितियों में स्नातक विज्ञान वर्ग के छात्रों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्तर कला वर्ग की छात्राओं से बेहतर है। अतः पूर्व में निर्मित शोध परिकल्पना स्वीकार की जायेगी।

परिकल्पना 5 के लिए क्रतिक अनुपात का मान 3.36 प्राप्त हुआ है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है अर्थात 99% स्थितियों में महाविद्यालयी शिक्षकों का जनसंख्या वृद्धि सम्बन्धी ज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से उच्च है। अतः शोध परिकल्पना स्वीकार की जायेगी ।

परिकल्पना 6 के लिए क्रान्तिक अनुपात का मान 3.36 प्राप्त हुआ है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है अर्थात शोध परिकल्पना स्वीकार की जायेगी तथा यह कहा जायेगा कि 99% स्थितियों में महाविद्यालयी शिक्षकों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्तर, स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से उच्च है।

शोध कार्य का शैक्षिक निहितार्थ –

प्रस्तुत शोध कार्य के प्राप्त परिणाम तथा निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग के छात्रा-छात्राओं की जनसंख्या वृद्धि से सम्बन्धित ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा प्रति संचेतना का स्तर स्नातक कला वर्ग के छात्रा-छात्राओं से उच्च स्तर का है जबकि महाविद्यालय शिक्षकों का जनसंख्या वृद्धि सम्बन्धी ज्ञान तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना का स्तर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से उच्च स्तर का है।

अतः यह आवश्यक है कि कला वर्ग के छात्रा-छात्राओं में भी जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता के स्तर को और अधिक बढ़ाया जायें। किसी राष्ट्र की जनसंख्या वृद्धि में उस राष्ट्र में निवासित व्यक्तियों की मनोवृति, मान्यतायें, परम्परायें एवं समस्यायें मुख्य रूप से जिम्मेदार होती हैं। भारत सम्पूर्ण विश्व के 2.6% भूभाग में स्थित है। जबकि जनसंख्या में सम्पूर्ण विश्व का 15.8% हमारे देश में है। जब हमारे पास 2.6% भूमि है तो हमारी आबादी भी 2.6% के आस-पास होनी चाहिए अर्थात हमारी आबादी 16 करोड़ होना चाहिए थी किन्तु इसके स्थान पर आबादी एक अरब से भी ज्यादा हो गई है। यह स्थिति देश के विकास का मार्ग अवरूद्ध कर देती है। देश वर्तमान में जितना विकास कर रहा है, उससे अधिक हमारी आबादी बढ़ जा रही है, जिससे विकास अपर्याप्त साबित हो रहा है। अतएव यदि राष्ट्र को विकसित, समृद्धि शाली बनाना है तो जनाधिक्य पर नियंत्रण लगाना होगा तथा युवा वर्ग के विद्यार्थियों में जनसंख्या वृद्धि तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति संचेतना उत्पन्न करनी होगा।

संदर्भ-

1. कपिलः एच.के.: अनुसन्धन विधियाँ ;1981द्ध हर प्रसाद भार्गव, पुस्तक प्रकाशन आगरा-4, पृ. 111-112.

2. गुप्ता, एस.पी.: सांख्यिकी विधियाँ (2009) शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृ. 298-299.

3. भटनागर, आर.पी.: शिक्षा अनुसंधान, (2008) लायल बुक डिपों, मेरठ पृ. 241

4. मालवीय, राजीव: शिक्षा के नूतन आयाम (2006) शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ. 128-130

5. मलैया, के.सी.: रमा शर्मा: जनसंख्या शिक्षा (2009) अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा पृ. 71-73

6. सिंह, रामलोचन: जनसंख्या अध्ययन (2000): चन्द्र प्रकाश एण्ड कम्पनी, हापुड (उ.प्र.) पृ0 57-58

7. आलोक: विश्व में बढ़ता खाद्यसंकट: सामयिक कारवाँ, अंक -5 वर्ष-2, जुलाई-सितम्बर 2008 पृ. 11-12.

Corresponding Author

Dr. Ullhas Dadhakar*

Academic Counselor